वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समाविष्ट वैदिक शिक्षा

*डॉ. नीतेश कुमारी

प्राचीन भारतीय शिक्षा का उद्भव वेदों से माना जाता है। यह विश्व का सर्वाधिक पुराना साहित्य है। आदिकाल में वेदों का ज्ञान लिपिबद्ध नहीं था। बहुत समय बाद ऋषियों के द्वारा वेदो को लिपिबद्ध किया गया। 'वेद' शब्द की उत्पति 'विद' धातु से हुयी है। जिसका अर्थ ज्ञान प्राप्त करना। वेदो को भारतीय जीवन दर्शन का श्रोत माना जाता है। वेदो को अनादि मान जाता है। वेदो में सांसारिक व्यवहारिक तथा अध्यात्मिक क्षेत्रो में मानव के लिए आवश्यक समरूप ज्ञान संग्रहित है।

ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद को अब चार अलग–अलग वेदो के रूप में स्वीकार किया जाता है। ऋग्वेद को आदिवेद माना जाता है। ऋग्वेद विभिन्न ऋषियों द्वारा रचित स्त्रोतो का संकलन है। इसमें प्राचीन भारत के सामाजिक एवं सांस्कृति जीवन एवं सभ्यता के विभिन्न पन्नों का सजीव चित्रण है, शेष तीन वेद ऋग्वेद से कुछ भिन्न प्रकार की क्रियाओं को प्रस्तुत करते है। सामवेद वास्तव में गायन पुस्तिका है। मंत्रो एवं श्लोको को सस्वर दोहराना इसका मुख्य लक्ष्य है। यजुर्वेद में मंत्रो, प्रार्थनाओं तथा यज्ञों की संस्कार विधियों का सजीव वर्णन है। अथर्ववेद में भारतीय चिकित्सा पद्धति, नक्षत्र विज्ञान, अर्थशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण स्त्रोत दिये गये है।

वास्तव में वेद शब्द अपने आप में इतना व्यापक तथा गहन अर्थवाला है कि विश्व की समस्त ज्ञान इसमें समाहित हो जाता है। भारतीय शिक्षा का आदि स्त्रोत – निसन्देह वेद ही था तथा इन्हीं के अनुरूप भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन दर्शन निर्धारित हआ। वैदिककालीन युग में वेदों का ज्ञान भारतवासियों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया था तथा यह ज्ञान आज भी भारतीयों के जीवन दर्शन में विभिन्न रीतियों प्रथाओं तथा परम्पराओं के रूप में विद्यमान है। वैदिककाल में यज्ञकार्य ऋषियों का एक कार्य अनुभव था जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से काफी महत्पूर्ण माना जाता था। वैदिककालीन यज्ञ केवल मौखिक आलाप, उच्चारण संगत, अग्नि प्रज्वलन अथवा आहुति मात्र नहीं था वरन् में सुविचारित वैज्ञानिक क्रियाकलाप थे जो वैज्ञानिक परीक्षणों पर आधारित होते थे तथा इनका एक प्रमुख उदेश्य भौगोलिक परिस्थितियों को अपने अनुरूप बनाना होता था। ऋषि लोग अपने सिद्धो के साथ विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक क्रियाकलाप सम्पन्न करते प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा स्वतः ही शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन अनौपचारिक ढंग से होता रहता था जो कालान्तर में औपचारिक स्वरूप ग्रहण कर लिया। परिणामतः वैदिककाल में गुरूकुल आधारित शिक्षा प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ।

वैदिककाल में जीवन दो प्रकारो परा तथा अपरा में विभक्त था परा का अर्थ थ कि ज्ञान कर्म तथा उपासना के द्वारा ब्रह्म अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करना जबकि अपरा का अर्थ था संगठित तथा नियोजित समाजिक व्यवस्था का संचालन करना। इससे स्पष्ट है कि परा के लिए आलौकिक अर्थात ईश्वरीय विद्याओं का ज्ञान आवश्यक था तथा 'अपरा' के

लिए लौकिक अर्थात सामाजिक विधाओं का ज्ञान महत्वपूर्ण था। इन्ही कारणों से वैदिक काल में शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य छात्रो की शारीरिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास इस तरह से करना था। जिससे मोक्ष प्राप्ति के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके। सादा जीवन तथा उच्च विचारों से निर्दिष्ट होनेवाली शिक्षा में छात्रों के सर्वागिंण विकास पर बल दिया जाता था।

वैदिक काल में बालको को प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही प्रारम्भ हो जाती थी। इस गृह आधारित शिक्षा का उदेश्य गुरूकुलो में उपनयन के बाद प्रदान की जानेवाली औपचारिक शिक्षा के लिए बालको को तैयार करना होता था। शब्दों का उच्चारण, शब्द ज्ञान, भाषा व्याकरण तथा गणित की प्रारम्भिक बातें घर पर बालको को सिखाई जाती थी। इस प्रकार घर ही बालक का प्रथम परन्तु अनौपचारिक शिक्षा संस्था होती थी। औपचारिक संस्थाओं के रूप में ऋषियों द्वारा संचालित आगम होते थे। जिन्हें गुरूकुल कहा जाता था। विद्यार्थियों को उपनयन के उपरान्त गुरूकुल में ही रहना होता था तथा गुरूकुल के नियमों का पालन करना होता था। गुरूकुल में शैक्षिक तथा अध्यात्मिक वातावरण के निर्माण पर अत्यन्त बल दिया जाता था। गुरूकुल का जीवन अत्यन्त सरल तथा सहज होता था। उसकाल में काशी मिथिला, कॉची उज्जैन, प्रयाग कैकय तन्जौर तथा मालखण्ड आदि अनेक स्थान शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे।

गुरूकुल में प्रवेश केवल सदाचार तथा योग्यता के आधार पर होता था। छात्रो को गुरूकुल के परम्पराओं तथा नियमों के अनुकुल आचरण करना पड़ता था। छात्र सामान्यतः गुरूकुल में 12 वर्ष तक अध्ययन करते थे। परन्तु अधिक विस्तृत एवं गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक छात्र 12 वर्ष से अधिक अवधि तक भी गुरूकुल में अध्ययन करते थे। गुरूकुल में छात्रों को कठोर अनुशासन में रहना होता था। वैदिककाल में गुरूकुलो में रहने वाले छात्रो के द्वारा पहनी जानेवाली वेशभूषा निश्चित रहती थी। गुरूकुल की परम्पराओं तथा नियमों के प्रतिकुल आचरण करने पर छात्रो को गुरूकुल से निष्कासित कर कर दिया जाता था।

वैदिक कालीन शिक्षा में छात्रो को ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से प्रदान किया जाता था। गुरू का प्रमुख स्थान था। शिक्षा संस्कृत भाषा में दी जाती थी। शिक्षक छात्रो को उनकी योग्यतानुसार तीन वर्गो में विभाजित कर लेता था, महाप्रज्ञ, मध्यमप्रज्ञ तथा अल्पप्रज्ञ अर्थात शिक्षा प्रणाली व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धान्त पर आधारित थी। छात्र व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर श्रवण मनन तथा चिन्तन करते थे। शिक्षण हेतु प्रश्नोतर, कहानी व्याख्यान वाद–विवाद तथा क्रियाकलाप आदि विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता था। वैदिक काल में श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन (भाव अनुभूति) नाम की तीन अध्यपन विधियों की चर्चा मिलती है।

वैदिक कालीन शिक्षा का उदेश्य मानव का सर्वागिंण विकास करना था। छात्रों को अपना शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा अध्यात्मिक विकास करने के पूर्ण अवसर दिये जाते थे। वैदिक शिक्षा का उदेश्य नैतिक चरित्र के साथ–साथ व्यक्तित्व का सर्वागिंण विकास करना था। जिससे व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ सामाजिक कुशलता प्राप्त कर सके।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली से पूर्णत भिन्न दृष्टिगोचन होती है। पाश्यात्प सभ्यता एवं संस्कृति के अधानुकरण में हम अपने प्राचीन आदर्शो को विस्मृत करते जा रहे है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आदर्श तत्वों को वर्तमान शिक्षा में समाहित करके छात्र असंतोष अनुशासन हीनता बेरोजगारी, नैतिक तथा चारित्रिक पतन आदि जैसा समस्यायों का समाधान संभव है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा की अनेक विशेषताऐं आधुनिक समय में पूर्णरूपेण

प्रासंगिक तथा उपयोगी है। आदर्शवादिता अनुशासन, गुरू शिष्य संबंध, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण विधि तथा प्रविधि पाठयक्रम तथा सरल जीवन शैली आदि विशेषताओं को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेश करके अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

***संस्कृत विभाग**

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संदर्भ सूची :–

1. ऋग्वेद, पारडी, सूरत 1957
2. अथर्ववेद– पं0 राधाकृष्ण श्रीमाली, नई दिल्ली 1995
3. ए. एस अल्तेकर– प्रचीन भारतीय शासन पद्धति, इलाहाबाद 1948
4. ए. एल बाशम – अदभूत भारत
5. रोमिला थापर – भारत का इतिहास
6. डी डी कौशाम्बी – प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता
7. डी. एन. झा – प्राचीन भारत
8. राधाकृष्ण चौधरी – प्राचीन भारत का इतिहास
9. पी.डी. पाठक – भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्यायें।